धर्मनिरपेक्षता

एन.के.नारायण

प्रस्तावना:-

बच्चो, धर्म कहते ही हमारे आँखों के सामने क्या आता है?

मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर..... और अन्य धार्मिक स्थल... क्यों है न!

पर क्या वास्तव में धर्म यही है? अपने धर्म को श्रेष्ठ मानना और दूसरे धर्म को झुठलाना क्या यही धर्म है ...

धर्म का वास्तविक अर्थ है... जिनेकी राह... संस्कार.. एक अच्छा व्यक्ति बनाने के ...

मनु ने धर्म के **दस लक्षण** बताये हैं:

> **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।**
> **धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम् ॥**
>
> **धैर्य**(धृति), **क्षमा** (दूसरों के द्वारा किये गये अपराध को माफ कर देना, क्षमाशील होना), **दम** (अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण करना), **अस्तेय** (चोरी न करना), **शौच** (अन्तरङ्ग और बाह्य स्वच्छता), **इन्द्रिय निग्रहः** (इन्द्रियों को वश मे रखना), **धी** (बुद्धिमत्ता का प्रयोग), **विद्या** (अधिक से अधिक ज्ञान की पिपासा), **सत्य** (मन वचन कर्म से सत्य का पालन) और **अक्रोध** (क्रोध न करना) ; ये दस धर्म के लक्षण हैं।)
>
> **जो अपने अनुकूल न हो वैसा व्यवहार दूसरे के साथ न करना चाहिये** - यह धर्म की **कसौटी** है।

यह पाठ हमें एक देश की प्रगति में धर्म किस प्रकार सहाय्य बना सकता है यह बता है |

आज की तारीख में हम भले ही स्वयं को धर्मनिरपेक्ष कहते हों पर क्या हमने इस शब्द का अर्थ जाना है? क्या हम सचमुच धर्मनिरपेक्ष हैं? अगर नहीं तो “धर्मनिरपेक्षता” प्राप्त करने हेतु हमें क्या करना होगा ...... इस जैसे प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए यह पाठ हमें प्रेरित करता है |

पाठ का आरंभ:-

१.

पाठ के शुरुवात में लेखक, महात्मा गाँधी द्वारा दिए गए धर्मनिरपेक्षता के अर्थ के साथ करते हैं.... “सभी धर्मों के लिए समान सम्मान, समान असम्मान नहीं”

यह परिभाषा भारत जैसे बहुधर्मीय देश के लिए बहुत आवश्यक है| यहाँ रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अगर दूसरों के धर्म का भी सम्मान करेगा तब ही हमारे देश में खुशहाली छा पाएगी |

इसीलिए लेखक यहाँ धर्मनिरपेक्षता “क्यों?” इस सवाल का उत्तर देते हैं.....

बच्चो,जैसे कि आप जानते हैं कि हमारा देश बहुधार्मिक देश है | यहाँ पर हिन्दू,मुसलमान,ईसाई, सीख, बौध्द,जैन जैसे अनेक धर्मों के लोग रहते हैं | और ये सारे लोग २९ राज्य और ७ केन्द्रशासित प्रदेशों में बंटे हुए है | और यह राज्यों का कर्तव्य है कि वे अपने नागरिकों की श्रध्दा का सम्मान करें... इसी कारण से धर्मनिरपेक्षता हमारे संविधान का मुख्य अंग बनी |

२.

धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता के बारे में बताते हुए लेखक कहते हैं...... एक से अधिक धर्म तथा एक से अधिक संस्कृतियों के कारण हमारा देश संपन्न है | इस प्रकार के देश में लोकतंत्र या प्रजातंत्र ही उपयोगी सिध्द होता है | इसके पीछे कारण है...

प्रजातंत्र में नागरिकों को अपने हिसाब से जीवन जीने का अधिकार होता है , यहाँ हर एक स्वतंत्र होता है |

लेखक के अनुसार यह एक सुनहरा अवसर है जब हम दूसरों की अच्छी बातें सीख सकते हैं | लेखक के अनुसार हमें विश्वासों के अंतर को नहीं बल्कि समानताओं के बारे में सोचना होगा हमें अपने दिमाग को खुला रखना होगा| तभी हम अपनी स्वतंत्रता के साथ-साथ हम देश की अखंडता को भी बनाए रखेंगे |

३.

अगर हम इस प्रकार से प्रजातंत्र का वास्तविक अर्थ समझकर कार्य करें तो इसका फ़ायद हमारी आने वाली पीढ़ी को होगा | हमारी आने वाली पीढ़ी नफ़रत की जगह प्यार को बढ़ावा देगी | धर्म के लक्षणों में क्षमा सबसे महत्वपूर्ण माना गया है | गाँधी जी भी कहते हैं कि "क्षमा शक्तिशाली का गुण होता है |" जब नफ़रत से मुक्त सामाजिक माहौल को प्रोत्साहन मिलेगा तब "वसुधैव कुटुंबकम" का सपना सच हो जाएगा |

४.

अल्पसंख्यक कौन?

इस बारे में बताते हुए लेखक कहते हैं कि हमारा देश इतना विशाल और विविधतायुक्त है, यहाँ सब अल्पसंख्यक हैं|

यह बात सच है क्योंकि हमारे देश हमें अब "अल्पसंख्यक कौन?" इसकी ओर ध्यान देने की अपेक्षा सामूहिक समानतओं की ओर ध्यान देना चाहिए|

लेखक के अनुसार किसी भी देश की प्रगति के लिए खासकर आर्थिक प्रगति के लिए शान्ति,उत्साह और आशा के वातावरण की आवश्यकता होती है |

अगर हम अपनी शक्ति अपने –आप को श्रेष्ठ सिध्द करने में गवाँ दें तो देश की प्रगति कब करेंगे?

इसी कारण हमने विभाजनकारी मानसिकता से दूर रहना है |

यह भेद-भाव का रास्ता एकतरफा है.... इस राह पर प्रगति भी नहीं और इस राह पर चलने वाला व्यक्ति पीछे भी नहीं आ सकता... कोई यू-टर्न नहीं !!!!!!

अतः धर्मनिरपेक्षता ही सर्वथा योग्य है.......

५.

लेखक ने धर्मनिरपेक्षता के उदाहरण दिए हैं:-

- लेखक के बेटे रोहन पर उनके पड़ोसी फरहू द्वारा बरसाया गया प्रेम
- राष्ट्रपति अब्दुल कलाम... हमारे मिसाईल कार्यक्रम की मुख्य शक्ति
- बैंगलोर के एक संगीत महोत्सव में लेखक ने अनेक हिन्दू संगीतज्ञों को उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के पाँव छूते देखा
- उमर अब्दुल्ला, दिलीप कुमार, उस्ताद अली अकबर खान और उस्ताद अमज़दअली खान जैसे संगीतज्ञों और कलाकारों को देश ने जिस प्रकार से स्वीकारा है |

६.

पाठ के अंत तक आते-आते लेखक धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करने के कुछ उपाय बताते हैं:-

- हमारे नेताओं को विभाजक नहीं अपितु योजक बनना होगा | इन्हें धर्म को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में देखना होगा|
- समुदाय(धार्मिक नेता) के नेताओं को राष्ट्र का नेता बनना होगा..... ना सिर्फ उन्हें सबसे पहले देश के बारे में ही सोचना होगा बल्कि अपने समुदाय को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा |
- हमें अपना नेता धर्म या जाति के आधार पर नहीं चुनना है अपितु उसके द्वारा किए गए कामों के आधार पर चुनना है |
- चुने हुए नेता को भी वर्तमान की परिस्थिति के अनुसार अपनी सोच रखनी होगी | उसे ऐसे कार्य करने होंगे जिससे देश की सभी दृष्टि से प्रगति हो | वह नेता जो वर्तमान में जिए ना कि इतिहास में
- युवाओं में उम्मीद जगाकर हमें आर्थिक प्रगति की दिशा में उत्साह से कार्य करना होगा
- हमें हर समुदाय को अपनी वैचारिक और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता देनी होगी | हमें सपने विचारों को खुला रखना चाहिए ताकि किसी अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा कभी-कभार दूसरे देशों के बहुसंख्यक समुदाय के साथ अपनी पहचानजोड़ने पर हम नाराज़ न हों|

- समान सिविल कोड की अपेक्षा वे समुदाय जिनके पर्सनल कोड प्रगतिवादी न हो, उन समुदाय के नेताओं ने यह मुद्दा उठाना चाहिए|
इन उपायों के कारण हमारे देश में एकता, उत्साह का माहौल बन सकता है |

उद्देश्य.

यह पाठ धर्मनिरपेक्षता क्या है? इस प्रश्न से आरंभ होकर हमें धर्मनिरपेक्षता के उपायों की ओर लेकर जाता है|
बच्चों, यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश में विविध धर्म के लोग रहते हैं | हम इन सभी प्रकार के धर्मों से वाकिफ़ होते हैं |
सिर्फ कुछ मौकापरस्त नेताओं के कारण हम अपने देशवासियों से दूर जा रहे हैं |
हमें इन नेताओं से बचना है | हमारा उद्देश्य देश की प्रगति होनी चाहिए, हमारा सपना अपने देश को सबसे आगे रखने का होना चाहिए | इस मार्ग में जो भी रुकावटे हों हमें उनसे मुकाबला करना चाहिए|
लेखक के अनुसार हमारी प्रगति में सबसे बड़ी रुकावट हमारी मानसिकता है जो हमें धर्म के नाम पर बांटती है|
अतः इस मानसिकता को हमें दूर भगाना है तथा मानवता के धर्म की स्थापना करनी है तभी “वसुधैव कुटुंबकम”का हमारा सपना सार्थक हो पाएगा |

पुष्टि-धन.

बच्चो, हमें हमेशा ऐसा लगता है कि एक धर्म दूसरे धर्म से भिन्न है | पर क्या वास्तव में ऐसा ही है? क्यों न इसका उत्तर आज आप स्वयं ही ढूँढें...
आज हम हर धर्म द्वारा बताई गई समान बातों को पढ़ेंगे:-

- भगवान एक है
- भगवान सब जगह है
- सभी धर्मों ने आत्मा के अस्तित्व को माना है
- भगवान का अस्तित्व मनुष्यों में है

- ❖ अध्यात्मिक ज्ञान का अधिकार सबको समान रूप से है
- ❖ सभी धर्मों में भगवान को जिस नाम से बुलाया जाता है, उस नाम का अर्थ है-“मैं” “सोऽहम्”
- ❖ सभी के प्रति प्रेम और आदर की भावना
- ❖ समान मूल्य:-किसी को मत मारो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, लालच से बचो
- ❖ सब मानव एक हैं
- ❖ शान्ति और अहिंसा

मूल्यांकन के लिए प्रश्न:-

१. लेखक के अनुसार धर्मनिरपेक्षता क्या है?

अ. अपने धर्म को बढ़ावा देना

आ. दूसरे के धर्म के प्रति अनादर

इ. सभी धर्मों के लिए समान आदर

ई. किसी भी धर्म को ना मानना

२. भारत किस बात पर विश्वास रखता है?

अ. हम महान हैं

आ. वसुधैव कुटुम्बकम

इ. हम सबसे अलग हैं

ई. हम कमज़ोर हैं

३. अल्पसंख्यक आबादी एक कुल कितने फ़ीसदी हैं?

अ. १२ से १०

आ. १५ से २०

इ. १२ से १५

ई. १५ से १७

उ.

४. किस प्रकार की मानसिकता हमारी प्रगति में बाधक हो सकती है?

अ. एकता की

आ. धर्मनिरपेक्षता की

इ. विभाजनकारी

ई. श्रेष्ठता की

worksheet:-

१. भारत में धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता क्यों है?
२. "विभाजनकारी मानसिकता" से आप क्या समझते हैं?
३. भारत में धर्मनिरपेक्षता का स्वरूप निश्चित करने ने लिए हमें क्या कदम उठाने होंगे?
४. आपके अनुसार भारत को महान राष्ट्र बनाने के लिए क्या करना आवश्यक है?
५. क्या आपको लगता है कि हम धर्मनिरपेक्षता का वास्तविक अर्थ जान पाएँ हैं?
६. महात्मा गाँधी जी के अनुसार, "सभी धर्मों के लिए समान सम्मान है, समान असम्मान नहीं |" इस उक्ति से आप क्या समझते हैं? उदाहरण द्वारा अपनी बात स्पष्ट करें |
७. लेखक ने कहा है कि हमारा देश कितना विशाल और विविधतायुक्त है, यहाँ हम सब ही अल्पसंख्यक हैं | क्या आप इस वाक्य से सहमत हैं? क्यों?
८. "हमारे विश्वासों में अंतर की जगह उनकी समानताओं को उजागर करें..." इस वाक्य को उदाहरण के आधार पर स्पष्ट करें |
९. आपके अनुसार भारत की एकता बढाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?